RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-06
June-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के उपन्यासों में नारी शिक्षा एवं सामाजिक सशक्तिकरण

डॉ ऋचा शर्मा

सह – प्राध्यापक, देव समाज कॉलेज ऑफ ऐजुकेशन सेक्टर 36 बी चंडीगढ़

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 12 June 2019

Keywords
नारी, शिक्षा, समाज, सशक्तिकरण, निराला

***Corresponding Author**
Email: richachhibbar[at]gmail.com

ABSTRACT

प्रस्तुत शोधकार्य सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की रचनाओं में नारी शिक्षा एवं सामाजिक सशक्तिकरण विषय पर आलोचनात्मक मूल्यांकन करने के उद्देश्य से किया गया है। हिन्दी साहित्य विश्व का महान तथा पवित्र साहित्य है। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की रचनाऐं भी इसी साहित्य की अमूल्य निधि है। महाप्राण निराला एक महान् कवि के लिये सर्वथा उपयुक्त, असाधारण व्यक्तिव लेकर अवतरित हुए और उनका सम्पूर्ण जीवन ही वीर रस का एक धार्मिक महाकाव्य है, जिसमें वीरता के सभी पक्ष - दानवीरता, दयावीरता और धर्मवीरता अनुस्यूत है। 'निराला' हिन्दी साहित्य के उन रचनाकारों में से है जिनके पास सशक्त भाव और मन को बांधने वाली भाषा है, जो आम व्यक्ति को अपने साथ लेकर चलती है। उनकी रचनाएं सामाजिक दशा व उसमें नारी शिक्षा और सशक्तिकरण के अभाव को प्रस्तुत करती है। इन्होंने अपनी रचनाओं और कृतियों के माध्यम से समाज में प्रचलित कुप्रवृतियों, कुरीतियों एवं जड़ मान्यताओं, परम्पराओं व तत्कालीन सामाजिक समस्याओं को दर्शाया गया है। स्त्री जाति की मनोदशा, समस्याओं, संघर्षपूर्ण जीवन और उनका चुनौती पूर्वक समाधान निराला के उपन्यासों में विद्यमान है। उनके अनसुार शिक्षा और ज्ञान का प्रसार ही नारी के संघर्ष, अज्ञान और अंधविश्वास से ग्रसित जीवन में रौशनी लाने का आधारभूत साधन है।

पृष्ठभूमि तथा तर्काधार

साहित्य समाज की उपज है, और साहित्य की सबसे बड़ी प्रासंगिकता सामाजिक होने या समाज से जुड़ने तथा समाज को अपने से जोड़ने में है । तभी साहित्य के जीवन सापेक्ष मूल्य कारीगर और उपयोगी हो पायेंगे। यही उद्देश्य 'निराला' अपनी साहित्यिक दृष्टि में रखते हैं।

'निराला' ने समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, आडम्बरों तथा कुरीतियों, सर्वहारा वर्ग का शोषण तथा नारियों के शोषण होने के प्रति समाज में शिक्षा तथा इनके प्रति सशक्त कदम उठाने का संदेश अपनी रचनाओं के माध्यम से दिया है। क्योंकि सशक्त विरोध ही कुरीतियों तथा अंधविश्वासों को समाप्त कर सकता है। उन्होंने समाज के जन–जीवन को सशक्त भावों से अभिव्यक्त किया है।

'निराला' समाज में फैली सामाजिक बुराइयों, जैसे– दलित वर्ग को शोषण, नारी का शोषण, अस्पृश्यता, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, जातिवाद, रूढ़िवादी प्रथाओं का सशक्त विरोध किया है। उनकी मानव प्रेम, सांस्कृतिक पुनरुत्थान की भावना, विश्व बन्धुत्व की भावना उनके साहित्य में व्याप्त है।

'निराला' के मन में युवा पीढ़ी की अनुशासनहीनता, अकर्मण्यता, उनका कुसंगति में पड़ना, नशीले पदार्थ का सेवन करने के प्रति आक्रोश उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। समाज में दलित वर्ग, सर्वहारा वर्ग तथा विधवा स्त्रियों के साथ अन्याय को देखकर 'निराला' में अपनी कविताओं, उपन्यासों आदि के माध्यम से विरोध अभिव्यक्त किया है। 'निराला' के व्यक्तिव में सादगी, विद्रोही प्रवृति, देशप्रेम की भावना, नारी शिक्षा एवं सशक्तिकरण की भावना, प्रकृति प्रेमी प्रतिभा प्रकर्ष, साहित्यिक दृष्टि आदि महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय गुण थे। 'निराला' ने समाज में व्यापत आडम्बरों, कुरीतियों तथा नारियों का शोषण होते देख सशक्त कदम उठाने का संदेश अपनी रचनाओं के माध्यम से दिया है। 'निराला' ने जिस वीरता का चित्रण किया है, वह जीवन संग्राम की वीरता है जो दुख और पराजय संघर्ष की कठिनाइयों और मार्ग के अवरोधों से भली–भांति परिचित है। अतः वे सशक्त विचारों और सशक्त भावों वाले महान लेखक हैं। वे सामाजिक परिवर्तन और सशक्तिकरण में विश्वास रखते हैं।

गर्ग, मृदुला (2005) के अनुसार, 'किसी कानूनी, राजनैतिक और आर्थिक अधिकार का मिलना तभी सार्थक हो सकता है, जब उसे सामाजिक स्वीकृति भी मिले। आर्थिक सक्षमता के बावजूद स्थिति में बदलाव नहीं आ पाना। क्योंकी नारी स्वयं को निर्णायक शक्ति नहीं मान पाती।

वजाहत, अजगर (2009) के अनुसार, समाज के हर वर्ग को निराला ने व्यापक फलक पर चित्रांकित किया। लिहाजा उनके कमोबेश उपन्यास उत्तर भारत के तत्कालीन सामाजिक व राजनीतिक हालातों की जिन्दा तस्वीर है। अतएंव मनोवैज्ञानिक व्यक्तिवादी, समाजवादी, सामाजिक ऐतिहासिक व आंचलिक उपन्यासों का केन्द्रीय स्वर सामाजिकता ही रहा निःसन्देह उनके उपन्यास समाज के आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई है।

अध्ययन की आवश्यकता

प्रस्तुत लघु शोध एक प्रयास है युगांतकारी रचनाकार सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक उत्थान में उनके साहित्य के योगदान और नारी शिक्षा एवं सामाजिक सशक्तिकरण में उनकी रचनाओं के योगदान का

RRIJM 2015, All Rights Reserved

विस्तृत अध्ययन करना व वर्तमान, अतीत व भविष्य में उनके साहित्य की प्रासंगिकता से विद्यार्थियों व पाठकों से अवगत करवाना है। एक प्रगतिशील समाज के विकास के लिये दिन–प्रतिदिन बढ़ती हुई समस्याओं और कठिनाइयों के प्रति जागरूक होना व आवाज सशक्त करना शिक्षा एवं सामाजिक सशक्तिकरण का अभिप्राय है। 'निराला' की रचनाओं में वेदना, जीवन में व्याप्त निराशा असन्तोष, असहिष्णुता, अतृप्ति आदि की जो भावनाएं व्यक्त हुई हैं वे समकालीन परिस्थितियों की उपज है। निराला ने अपने रचनाओं के माध्यम से समाज में शिक्षा का महत्व और उसके लाभदायक परिणामों को दर्शाया है, वे समाज में स्त्री शिक्षा के साथ साथ दलित वर्ग की शिक्षित होने पर जोर देते हैं।

शोध विधि तन्त्र

प्रस्तुत शोध कार्य में ऐतिहासिक शोध विधि अपनाई गई है। किसी भी समस्या कथन के सामाजिक एवं नैतिक दार्शनिक विचारधाराओं की परख करने के लिये ऐतिहासिक विधि की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि यह विधि समस्या कथन के भूतकाल, वर्तमान, भविष्यकाल का अध्ययन एवं विश्लेषण करने में सहायक होती है।

उपकरण

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के उपन्यासों को आधार बनाकर नारी शिक्षा एवं सामाजिक सशक्तिकरण के विषय में विभिन्न आलोचकों, विद्वानों व रचनाकारों द्वारा दिये गये तर्कों के आधार पर तथा पुस्तकालयों की सहायता व प्राप्त सामग्री का अन्वेषिका ने अपने शोध प्रबन्ध में वर्णन किया है तथा अपने शोध प्रबन्ध में शामिल किया है।

अध्ययन के उद्देश्य –

वर्तमान अध्ययन के उद्येश्य निम्नलिखित हैं–

1. वर्तमान समय में सामाजिक मूल्यों का अभाव व सामाजिक कुरीतियों, रीति–रिवाजों, अंधविश्वासों, समस्याओं के कारणों से परिचित करवाना।
2. वर्तमान समय में नारी शिक्षा व सामाजिक सशक्तिकरण के अभाव व सामाजिक कुरूतियों, रीति रिवाजों, अंधविश्वासों, समस्याओं के कारणों से परिचित करवाना।
3. 'निराला' द्वारा वर्णित मानवीय संवेदनाओं का आधुनिक समाज के सन्दर्भ में विश्लेषण करना जिससे उन विचारों की उपयोगिता का विस्तृत विकास हो सके।

परिणाम

'निराला' की रचनायें में उनका समन्दयवादी दृष्टिकोण अतीत और वर्तमान के श्वेत पत्र को अपनाकर अपनी प्रगतिशीलता का प्रमाण प्रस्तुत करती है। वे प्रगतिशील विचारों का समर्थन करते हुए सामाजिक सुव्यस्था एवं नियन्त्रण के लिये नीतियों, आदर्शों अनुशासन, परम्पराओं आदि को समाज की प्रगति के लिये आवश्यक मानते हैं। वे अवांछित रूढ़ियों, अंधविश्वासों का तीव्र विरोध करते हैं। इस प्रकार उनका सांस्कृतिक दृष्टिकोण समाज में प्रगतिशीलता तथा सामाजिक सशक्तिकरण के सम्बन्ध को चित्रित करता है। निराला ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में शिक्षा का महत्व और उसके लाभदायक परिणामों को दर्शाया है, वे समाज में स्त्री शिक्षा के साथ साथ दलित वर्ग को शिक्षित होने पर ज़ोर देते हैं ताकि सामाजिक सशक्तिकरण की भावना सभी के दिलों में पनप सके और वह बुराइयों के खिलाफ सशक्त आवाज उठा सके। अतः 'निराला' सभी पाठकों के लिये एक अच्छे मार्गदर्शक रहे हैं।

परिणामों की विवेचना तथा अध्ययन के निहितार्थ

'निराला' की रचनाओं के अध्ययन के पश्चात् उनके साहित्यिक सामाजिक विचारों व अनुभवों का विवेचन विश्लेषण करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि उनकी दृष्टि समाज केंद्रित है। समाज में सर्वहारा वर्ग, पीड़ित वर्ग तथा नारी वर्ग की विविध स्थितियों और समस्याओं पर उन्होंने विशेष ध्यान दिया है। समाज में फैली विभिन्न प्रकार की बुराइयों की सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों को पकड़ने और उन्हें सार्थक अभिव्यक्ति देने में 'निराला' को कल्पनीय सफलता मिली है। उनका पीड़ित वर्ग, कमजोर वर्ग व नारी वर्ग आदि इन सब पात्रों पर ध्यान केंद्रित हुआ है।

निराला ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन के संघर्ष और समस्याओं का सार्थक चित्रण किया है । उनके उपन्यास **'अप्सरा', 'अलका', 'निरुपमा', 'प्रभावती', 'चोटी की पकड़','काले कारनामे'** का धरातल नारी मनोविज्ञान ही है । ये सभी उपन्यास नारी प्रधान है – जिनमे वह निरंतर संघर्ष करते हुए , उन बंधनो उन रूढ़िवादी विचारधाराओ का विरोध करती है जो उसकी स्वतंत्रता , उसकी गरिमा को आहात करते है । निराला के उपन्यासों में स्त्रियां साहसी, सशक्त एवं विद्रोही हैं। वह शिक्षित हैं, अर्धशिक्षित हैं, ग्रामीण, वैश्या एवं कामकाजी हैं । निराला के स्त्री पात्र प्रगतिशील और चेतनशील है । निराला विधवा विवाह के घोर समर्थक रहे है, जिसका उदाहरण उनके द्वारा रचित उपन्यास 'अप्सरा' की स्त्री पात्र वीणा से मिलता है । जिसके चरित्र में बुद्धिमता एव साहसिकता का परिचय मिलता है । निराला का प्रत्येक मुख्य स्त्री पात्र उनका नारी के प्रति प्रगतिशील मानसिकता को दर्शाता है । वहीं दूसरी ओर उनके ग्रामीण स्त्री पात्र अनपढ़, अंधविश्वासों से ग्रसित टोने–टोटकों में लिप्त, स्त्री के प्रति स्त्री भावना का चित्रण भी देखने को मिलता है । एक अन्य उपन्यास ' प्रभावती में निराला ने राजसी परिवारों में

RRIJM 2015, All Rights Reserved

स्त्रियों के ज्ञान ,त्याग ,साहस ,प्रेम व राष्ट्रीयता की भावना को चित्रित किया है ।

निराला के उपन्यासों की प्रत्येक स्त्री पात्र पुरूष पात्रों के मुकाबले अधिक सशक्त, उज्जवल एवं उदात्त है। वह प्रगतिशील है। उन्होंने अपने उपन्यासों में नारी की समस्याओं के साथ साथ उनके समाधान भी प्रस्तुत किए हैं। उनका प्रत्येक उपन्यास उनके विद्रोही स्वभाव व क्रांतिकारी विचारधारा का संवाहक है। निराला के वह स्त्री पात्र जो ग्रामीण पृष्ठभूमि से आते हैं, उनकी समस्यओं के समाधान के रूप में निराला ने उनका शिक्षित होना, अंधविश्वासों व रूढ़िवादी परम्पराओं से मुक्ती व प्रगतिशील विचारधारा का व्यक्तित्व में समवेषण प्रस्तुत किया।

शैक्षिक महत्व–

1. समाज के प्रतिबद्ध लेखक के रूप में 'निराला' ने परमपराओं और रूढ़ियों से लगातार संघर्ष करते हुए नई प्रतिमानों व मान्यताओं की सृष्टि की है।
2. 'निराला' के उपन्यास समाज के प्रत्येक वर्ग में स्वयं का दृष्टिकोण विकसित करने व गहराई से वास्तविक समस्याओं पर विचार करने व उनके उन्मूलन के उपाय सोचने के लिये प्रेरित करती हैं।
3. 'निराला' की रचनायें नारी के प्रति अन्याय और अत्याचार के खिलाफ सशक्त विरोध करने तथा सशक्त आवाज उठाने के लिए प्रेरित करती हैं, जो समाज की व्यवस्था को खोखला बना रहे हैं।
4. शिक्षा एवं ज्ञान के बिना जीवन व्यर्थ है। शिक्षा हमें स्वालम्बी बनाती है, जो जीवन निर्वाह के लिये आवश्यक है।
5. जीवन के प्रति अड़िग आस्था की प्रवृति जागृत करना 'निराला' के काव्य का मौलिक गुण हैं।
6. आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का समावेश करना ताकि मनुष्य के अंतर्द्वनद्व, कुण्ठाओं, मनोविकारों का विश्लेषण कर उनका समाधान ढूंढा जा सके।
7. 'निराला' के अनुभवों को शिक्षा से जोड़कर जन-सामान्य को देश की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक स्थिति व समाज में व्यापत समस्याओं को समाधान के लिये प्रेरित करना।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1 'निराला', सूर्यकान्त त्रिपाठी (1968) समाज और स्त्रियां, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली।
2 'निराला' (1969) साहित्य साधना, राधाकृष्णन प्रकाशन, दिल्ली।
3 गर्ग, मृदुला (2005) समागम, अशोक प्रकाशान, दिल्ली।
4 वजाहत, अजगर (2009) सामाजिक चेतना, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली।

RRIJM 2015, All Rights Reserved